

प्रस्तावना

पूज्येदररी प्रवर्तिनी श्री प्रताप श्रीजी की शिष्या पूज्य साध्वीजी महाराज रिद्धिश्रीजी गत स० २०१७ पोषकृष्ण १ को कलकत्ते पधारी थीं—उनके साथ उनकी आनाकारिणी साध्वियाँ श्री चन्द्रश्रीजी, साध्वीश्री धरणेश्रीजी एव श्री दिव्यश्रीजी थी । वे यहाँ काफी अस्वस्थ रहने लगीं । निरंतर रूगणवस्था में रहने पर भी वे शांत स्वभावी एव महान सरल थीं । आखिर तक वेदना अत्यन्त बढने पर भी उनका यह शांत स्वभाव बना ही रहा एव आने-जानेवालों को बराबर धर्मापदेश देती ही थीं । स० २०१९ की चैत्र कृष्ण १ सोमवार को प्रातःकाल उनका निर्वाण हो गया । उनके देहावसान से समाज को काफी क्षति हुई है । उनकी रूगणवस्था में उनकी शिष्याओंने एव उनमें विशेषकर साध्वीनी श्री चन्द्रश्रीजी महाराजने काफी सेवा की है । यहाँ रहनेवाले देखते थे कि उनकी सेवा में उन्होंने रात में पूरी नींद नहीं ली एव दिन में पूरा आहार नहीं किया ।

उनके निर्वाण पर अग्नि सम्स्कार का कार्य यहाँ पर यथा विधि अच्छी तरह से सम्पन्न हुआ । संघ के अनेक भाई-बहिन तथा अनेक प्रमुख व्यक्ति उनकी शययात्रा में साथ थे । उनके लिये पालखी तैयार करवाई गई—रग विरगी भूडियों

से तथा रौप्य कण्ठों से उसे सजाया गया । सैकड़ों रुपयों की उधाल करते हुये उनकी शव यात्रा आगे बनी ।

उस वक्त समाज की ओर से स्वर्च के लिये चिट्ठा किया गया था । उसमें अनेक बन्धुओं ने अपनी अपनी इच्छानुसार सहयोग दिया । उसमें से यहाँ के तूलापट्टी स्थिति श्री बड़े मदिरजी में अठाई महोत्सव किया गया एव एक दिन श्री दादाजी महाराज की पूजा भी भगाई गई । अठाई महोत्सव में एक दिन बीकानेर निवासी सैठ चपालालजी मुदरलालजी गोलखा की ओर से केशरिया मोदकों की प्रभावता भी की गई ।

उस चिट्ठे में से जो रकम बची हुई थी—उसको स्वर्च करने के लिये अनेक बन्धुओं ने कहा कि रात दिन काम में आने लायक एक स्नात्र पूजाकी पुस्तक की जरूरत है अत एव यह पुस्तक तैयार करके प्रकाशित की गई है । इसमें मशोधन आदि का कार्य पूज्य साध्वीजी महाराजश्री चन्द्रश्रीजी ने किया है—फिर भी कोई त्रुटि हो तो विद्वद्जन उसे सुधार लें ।

चूँकि इस कार्य के आय व्यय का हिसाब हमारे ही जिम्मे रहा था अतएव हमें यह सब करने का मौका मिला—एव इसके हिसाब किताब का पूरा विवरण भाओचरों सहित फाईल बना कर श्रीमन्त्रिजी में ही रख दी है—जिन महा-
। की इच्छा हो वे इसका निरीक्षण कर सकते हैं ।

अन्तमें निवेदन है कि महाराजश्री की शोक सभा में एक विचार आया था कि उनकी स्मृति में कलकत्ते में एक धर्मशाला बनवानी चाहिये । निश्चय ही धर्मशाला की यहाँ नितान्त आवश्यकता है तथा उसमें साधु साध्वियों के भी ठहरनेकी व्यवस्था रहनी चाहिये ताकि धर्मध्यान आदि का काम भी उठा सकें । इसके लिये पूज्य साध्वीजी महाराजश्री चन्द्रश्रीजी काफ़ी प्रेरणा दे रही हैं—आशा करते हैं—गुरुदेव महाराज की महती कृपा से यह कार्य सफल होगा ।

—दीपचन्द्र नाहटा

जिन मंदिर दर्शन विधि

जिन मंदिर में दर्शनार्थ जाने के समय खान पान की सभी वस्तुएँ त्याग करके, मुस्त में पान बगैरह हो तो कुल्ला करके एव हाथ धोकर मंदिर में प्रवेश करते वक्त तीन बार “निसीद्धि, निसीद्धि, निसीद्धि” कहना चाहिये । मन्दि में चगाने के लिए मेरा, मिष्टान इत्यादि ले जाना हो तो उसकी कोई मनाई नहीं है । मंदिर में ल जाइ हुई खाने पीने की कोई भी सामग्री अपने खाने पीने के काम नहीं आती है । कुछ लोग पान खाते हुए या मुँह में सुपारी इटायची खाते ही मंदिर में जाते हैं—यह अपने नियम विरुद्ध है ।

मंदिरजी में प्रवेश करने पर—प्रभू मुद्रा को देखते ही दोनों हाथ जोटकर मस्तक नवाकर, हर्ष के साथ, उल्लास के साथ—प्रभू गुण गान की कोई एक स्तुति बोलनी चाहिये । फिर तीन बार प्रदक्षिण देते समय—इस प्रकार बोलना चाहिए—

पहिली प्रदक्षिणा के समय

हे प्रभो—चान गुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथम प्रदक्षिणाम्
ददामि ।

दूसरी प्रदक्षिणा के समय

हे प्रभो—दर्शन गुणस्य प्रापत्यर्थं द्वितीय प्रदक्षिणाम्
ददामि ।

तीसरी प्रदक्षिणा के समय

हे प्रभो—चारित्र गुणस्य प्राप्त्यर्थं तृतीय प्रदक्षिणाम्
ददामि ।

इसके पश्चात् चावल का साथिया करे एव ऐसा बोले

हे प्रभो ! चतुर्गति निर्मोहार्थं स्वस्तिक रचयामि ।

हे प्रभो ! चारों गतियों को नाश करने के लिये मैं यह
साथिया कर रहा हूँ । इसके बाद चावलों की तीन दिगली
करे एव ऐसा बोले ।

हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन चारित्र प्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्ज
रचयामि ।

(हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिए
मैं तीन त्रिगलियाँ कर रहा हूँ) उन तीन दिगलियों के ऊपर
एक अर्द्ध चन्द्राकार करे एव यह बोले—

हे करुणासिन्धो ! सिद्ध स्थान प्राप्त्यर्थं चन्द्राकार
करोमि ।

(हे करुणासिन्धो ! सिद्ध स्थान की प्राप्ति के लिये—मैं
अर्द्ध चन्द्राकार करता हूँ ।

इसके बाद पुरुष को भगवान् के दाहिनी ओर एव स्त्री
हो तो बाँह ओर सड़ा होकर दोनों हाथ जोड़ कर दोनों

गोड़ों पर मन्तक को उठाकर इस प्रकार उठ बैठ के साथ
तीन बार बोले—

इच्छामि समायमणो, वदिऊ जावणिनाए निर्मीहि
आए मत्थेण वढामि ।

फिर बैठकर —

इरियावहियाए—

इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! इरियावहिय पडिफ्-
मामि ? इच्छ । इच्छामि पडिफ्मिउ, इरियावहियाए,
विराहणाए, गमणागमणे, पाणागमणे वीयम्मणे हरिय-
क्कमणे, ओमा उतिग पणग ऋग मटी मडडामताणा सत्त-
मणेजे मे जीवा पिगहिया, एंगदिया, वेइदिया, तेइदिया,
चउरिंदिया, पंचिदिया, अमिहया, अत्तिया, लेसिया,
सघादया, मघट्टिया, परियात्रिया, किलामिया, उदविया,
ठाणाओ ठाण सकामिया, जीत्रियाओ वररोविया तम्म
मिच्छामि दुक्कड ।

तस्स उत्तरी

तस्सउत्तरीक्कणेण, पायच्छित्तक्कणेण, निसोहीक्कणेण,
निमल्लीक्कणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्टाए, ठामि
काउस्सग्ग ।

अन्नत्थ उत्ससिएण

अन्नत्थ ऊममिएण, नीसमिएण, खासिएण, छीएण,
जभाइएण, उडडुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए, पितमुच्छाए
सुद्धुमेहिं अगमचालेहिं, सुद्धुमेहिं खेल सचालेहिं सुद्धुमेहिं
दिद्धिमचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अवि
राहिओ, हुज्जमे काउस्सगो, जाव अरिहताण भगरताण,
नम्मुरारेण न पारेमि, ताव काय टाणेण मोणेण भाणेण
अप्पाण सोसिरामि ।

फिर एक लोगस्स या चार नक्कार का काउस्सग करे—
काउस्सग पार करके लोगस्स प्रगट कहे —

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरेजिणे । अरिहते
कित्तइस्स, चउवीसपि केवली ॥१॥ उसभमजिअ च वदे,
सभमभिणदण च सुमई च । पउमप्पह सुपास, जिण
च चदप्पह वदे ॥२॥ सुविहिं च पुण्णदत्त, सीअलसिज्ज
सनासुपुज्ज च । विमल मणत्त च जिण, धम्म सत्ति च
वदामि ॥४॥ कुंधुं अरच महिं, वदे सुणि सुयंय नमिं
जिण च । वदामि रिद्धनेमिं, पास वह वद्धमाण च ॥४॥
एव मए अभियुत्ता, त्रिहुयस्यमला पहीणजरमरणा । चउ
वमपि जिणपरा, तित्थयरामे पसीयतु ॥५॥ कित्थिय

वदियमहिया, जे ए लोगस्म उचमा सिद्धा । आम्हा
 बोहिलाभ, ममाहिनर मुचम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मल-
 यरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवर गभीरा,
 मिद्धा सिद्धि मम दिसतु ॥७॥

फिर नीचे बैठकर जीमण गोड़ा नीचा, डावा गोड़ा
 ऊँचा करके थजलि बांधकर इस प्रकार चैत्य वंदन करना
 चाहिये—या कोई स्तवा वगैरह बोल—

अनंत गुणी श्री ग्रान्तिना नर नारी गुण गावे,
 द्रव्य भाव शुचि प्रेमसु अजर अमर पद पावे ।
 सुख सम्पत्ति कारक तुम प्रभू पूर्ण प्रीति प्रिसराम,
 क्षेम कुशल नित्य चाहिये करू वंदन शिरनाम ।

जं किंचि नाम तित्थ, मग्गे पायाले माणुसे लोए ।
 जाइ जिण बिबाड, ताइ सत्ताइ वदामि ।

णमोत्पुण अरिहताण भगवताण ॥१॥ आइगराण
 तित्थयराण सय-ममुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिस
 सीहाण, पुरिमर पुँडरिआण, पुरिमर-गध हत्थीण ॥३॥
 लोगुत्तमाण लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपईयाण, लोग
 पज्जो अगराण ॥४॥ अमयदयाण, चस्तुदयाण, मग्ग-
 दयाण, सरणदयाण बोहिदयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्म
 देसियाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवर चाउरत

चक्रवर्तीण ॥६॥ अस्पडिइय वरनाण दसण धराणं विअट्ट
 छउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण
 बुद्धाणं धोहयाण मुत्ताण मोअगाण ॥८॥ सव्वन्ण सव्व
 दरिमीण सिवमयल मरुअमणत मक्खयमव्वाह-वाह मणुण
 रायित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्ताणं नमो
 जिणाण जिअभयाण ॥९॥ जेअ अईया सिद्धा, जेअ
 भविस्सतिऽणागए काले । सपइ अ वट्टमाणा, सवेतिविह्वेण
 वदामि ॥१०॥

जावति चेइयाइ उट्टे अ अहे अ तिरियलोए य ।

सव्वाइ ताइ वदे इह सतो तत्थ सताइ ॥१॥

इच्छामि एमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि
 आए मत्थएण वदामि ।

भगवन् जावत केविसाहू भरहेरवयमहाविदेहे अ ।

सवेत्ति तेत्ति पणओ त्तिविह्वेण तिदडविरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्तिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥२॥

फोई स्तवन बोले-यादमें

उवसग्गहर स्तोत्र

उवसग्ग हर पास, पाम वदामि कम्मघणमुक्क ।

निसहर विमनिन्नास, मगल कछाण आवास ॥१॥

अन्नत्य ऊममिण नीस सिण खासिण छीण
जमाइण उड्डुण वायनिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छए ।१।
सुहुमेहि अग सचालेहि, सुहुमेहि खेल सचालेहि, सुहुमेहि
दिट्टि सचालेहि ॥२॥ एवमाइणहि आगारहि, अभिग्गो
अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो ॥३॥ जाव अरिहताण
भगवताण नमुषारेण न पारेमि ॥४॥ ताव काय ठाणेण
मोणेण ज्ञाणेण अप्पाण वंसिरामि ॥५॥

इसके पीछे हाथ लम्बा करके, नेत्रों को बन्द करके,
होठ आदि हिलाये बिना मौन में एक नजकारका काउ
स्सग करें । काउस्सग पार करके एकथुई बोलो --

अर्च्यदे श्री आण्डिजिनवर वीरजिन पावापुरे
वासुपूज्य चम्पा पुरिअ सिद्धा नेमिरेवा गिरवरे
सम्मेतशिखरे बीस जिनवर मुक्ति पहुचा मुनिवर
चौबीस जिनवर तेह बद्ध सकल सय सुम्भकर

आवस्सहि, आवस्सहि, आवस्सहि तीन वार कहकर
मदिर से बाहर आर्ये ।

पूजन विधि

जैन शास्त्रों में पूजा की विधि बहुत ही विस्तारपूर्ण विधिविधान सहित लिखी हुई है एवं पूजा का फल भी बहुत कहा है। लेकिन प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह समय नहीं है कि वह ग्राम्य पत्कर ही सब विधि जानें। अतएव संक्षेप में— यहाँ जिन पूजन विधि लिखते हैं ताकि हर एक साधारण व्यक्ति भी उसे समझ सके।

पूजन करनेवाले को स्नान आदि करके अपने शरीर की शुद्धि करनी चाहिये। आजकल कट व्यक्ति घर से ही स्नान करने आते हैं एवं मन्दिर में आकर हाथ पाव धोकर कपड़े बदलकर पूजा में चले जाते हैं—लेकिन घरसे मन्दिर तक पहुँचने में—कपड़े पहिनके आना एवं रास्तों में कितनों का स्पर्श होता है कोई ठीक थोड़े ही है। एवं दूसरी बात यह है कि सब लोग तो यह नहीं जानते कि ये घर से स्नान करके आये हैं अतः उनके अनुकरण में दूसरे भी सिर्फ हाथ पाव धोकर पूजा में प्रवेश करना चाहते हैं।

स्नान शुद्धि के बाद पूजन के वस्त्र याने धोती पहनकर, चप्पर का उतरासन करने—मुँह एवं नाक ठीक से बँधकर चन्दन केशर, घोटकर तैयार कर लें—शुद्ध के लिये केसर में थोड़ा बरस टालें—गरमी हो तो गुलाब जल भी डालें। चन्दन केशर का अपने ललाट पर तिरक या टीकी लगाकर

मूल गभारे के पास आवें । प्रभू मुद्रा को देखते ही वन्दना करके अपनी केशर च इन पुष्प आदि को धूप स्वेकर--मूल-गभारे में प्रवेश करें । प्रतिमाजी को पहिले धूप देना चाहिये । तत्पश्चात् उनके द्धत्र चर भामंडल, या आभूषणों आदि को उतार कर यथा स्थान रखें । फिर जीव दया करयात् से कोई चीटों, मकोडा आदि न हो, देखकर प्रतिमाजी के मोर पींछी व्यवहार करे । फिर पानी व दूध धानकर, धूप देकर पहिले कलशों से स्नान करावें । खस फूँचो से जहाँ-तहाँ केशर लगी हो उतारकर दूध से एव पुन पानी से तथा गरमी हो तो पानी में गुलाब जल केवड़ा आदि ढाल कर स्नान करावें । पास में जो भाई बहिन खड़े हों उनको भी सेवा में लाभ लेनेका निवेदन कर । बादमें एक एक करके तीन अगल्वणों से प्रतिमाजी को ठीक से पोछे । कहीं भी जरा भी जल बिन्दु भी न रहना चाहिये ।

तीसरा अगल्वणा करके--पुन धूप देकर प्रभूकी चन्दन केशर से इस प्रकार पूजा करें--

पूजा सर्व अगों में पहिले दाहिने तरफ, फिर बाई तरफ करें--नव अगोंकी पूजा होती है--उनका एक एक श्लोक पठें और अग भेंटें--

जल भरी सप्त पात्रमां, युगलिक नर पूजत ।

ऋषभ चरण अगूठड़े, दायक भव जल अन्त ॥१॥

दोनो पांवके अगों का पञ्च ।

सिद्ध शिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवत ।

वसिया तिण कारण सही, सिद्ध शिला पूजत ॥९॥

शिला का पूजन ।

उपदेशक तव तत्वना, तिम नव अग जिणद ।

पूजो बहुविध भावथी, कहे सहु वीर मुण्डि ॥१०॥

इस प्रकार पूजन होता है । यह ध्यान में रखना चाहिये कि पहिले मूलनायकजी की पूजा, बाद अ गान्य तीर्थ करों का पूजन, पीछे श्री गणधरों का एव उसके बाद आचार्यों का पूजन करके फिर शासनदेवी भैरुजी आदि का पूजन करना चाहिये ।

फिर तीन प्रदक्षिण देकर, चावलों का साथिया करके फल, फूल, मेवा मिठाई, चढ़ाकर चैत्य बंदना करना चाहिये । फिर आरती करनी चाहिये ।

प्रभात की आरती

जय जय आरती शक्ति तुमारी,

तोरा चरण कमल की मै जाऊँ बटिहारी ॥१॥

विश्वसेन अचिराजी के नन्दा,

शांतीनाथ मुख पुनम चन्दा ॥जय जय आ०॥

चालिस धनुष सोवन मय काया,

शृंग लोद्धन प्रभू चरण सुहाया ॥जय जय आ०॥

चक्रवर्ति प्रभू पवन सोई,

सोन्म जिनपर जग सुदु मोई ॥अरु वर कान्त

मगल आरती मोरे श्रीन,

जनम ननम को छादी छीने ॥अरु वर कान्त

करजोड़ी सेवक गुण गानै,

सा नर नारी अमर पद पावै ॥अरु वर कान्त

॥इति॥

पूजा करनेवालों को यह बगवत् पदान में बताया है कि उनके शरीर में यदि जरा भी अशुद्धि हो, छाया हो, फोड़ा, फुसी से मवाद, घेप आदि निदृश्या हाथ में के रज्जुम्वला होने से तीन दिन तक पूजन नहीं करना चाहिए। जिहानि शव को उठाया हो--व उन दिन तक, शव को शवयात्रा में गये हो व एक दिन तक पूजन न करें। शिव पर में लड़के लड़की का जन्म हुआ हो--वे भी पूजन न करें।

पूजन में काम आनेवाले पुराणों का अर्थ, शिक्षा, काम में लेनेसे अनेक जीवों का विनाश होता है--कभी कभी कुछ-कुछ वेदद्वय जीव पुराणों में मिले गये हैं। पुराणों के काटने, विरोध से सहज ही उनका विनाश हो जाता है--इसका अर्थ विवेक धारण है।

मुखकोस बाँधने का नियम है कि मुख और नाक

रामि अह मिच्छामि, दुक्कडं तस्म ॥३॥ जज मणेण
 चित्तिय—ममुह वायाइ भासिय किंचि । अमुह ऋएण
 कप, मिच्छामि दुक्कड तस्म ॥४॥ सामाह्य पोमह सठि-
 यस्म जीवस्म जाह लो कालो । सो सफलो बोधत्रो से
 सो ससार फल हेऊ ॥५॥ सामायिक विध लीघु विधे
 कीधुं विधि करता जो कोइ अविधि आशातना-लागी होय,
 दश मन के, दश वचन के, बारह काया के एव प्रकारे ३२
 दूषण में जा कोई दूषण लगा होय सो सत्र मन वचन
 काया करक मिच्छामि दुक्कड ।

तपागच्छ में ये गाथाएँ बोली जाती हैं

सामाह्य वय जुत्तो जात्र मणो होई नियम मजुत्तो ।
 छिन्नई असुह कम्म सामाह्य जत्तिया वारा ॥१॥ समाई
 यम्मि उकए समणो इर सावओ हयइ जग्हा । एएण कार-
 णोण, बहुमो सामाह्य कुज्जा ॥२॥ सामायिक के ३२
 दूषण ।

पश्चिदिय मंरणीं तह नमविह बभञ्जेर जुत्ति धरो,
 चउरिह कमाय मुक्को इअ अट्टारम गुणोहिं संजुत्तो पच
 महउय जुत्तो पच विहायार पात्तलण भमत्थो । पच समि-
 ओत्ति छत्तीम गुरु मज्झ ॥२॥

इति

श्री अष्टप्रकारी पूजा

जल पूजा

विमल फेवल भासन भास्कर, जगति जतु महोदय कारण ।
जितरं बहुमान जलौपतः, शुचिमतः स्नायामि विशुद्धये ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनतानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्री मज्जिनेन्द्राय जल यजामहे स्वाहा ।
॥ इति जल पूजा ॥

जल पूजा से संसार में मनुष्यों का अभ्युदय होता है
तथा उनके मार्ग सतार के परिभोग और शरीर आदि में
अतित्य भावना का विकाश होता है ।

चन्दन पूजा

सकल मोह तिमिर्न विनाशन, परमशीतल भाव युत जिन ।
विषयकर्म चदन दर्शनी, सहज तत्त्व विकाश कृतेभ्ये ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अन्तानर्द ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चदन यजामहे स्वाहा ।
यह कह कर चदन घटायें ।

चन्दन पूजा से अकारण में स्थित अज्ञान तथा मोह
रूप अंधकार का नाश होता है, हृदय में शांति और समता
उत्पन्न होती है तथा देव गुरु भगों के प्रति विषय का विकाश
होता है ।

पुष्प पूजा

विकचनिर्मल शुद्ध मनोरमै विशद चेतन भाव समुद्भव ।
सुपरिणाम प्रसन्न घनैर्नरै , परमतत्त्वमय हि यजाम्यह ॥ १

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय पुष्प यजामहे स्वाहा ।
इति पुष्प पूजा ।

पुष्प पूजा से अन्तःकरण में सद्भावना जागृत होती है,
चित्त की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है
एव यथार्थ तब का बोध होता है ।

धूप पूजा

सफल कर्म महेंधन दाहन, विमल मकर भाव सुधूपन ।
अशुभ पुद्गलसग विर्गर्जित, जिनपते पुरतोऽस्तु सुहर्षित

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय धूप यजामहे स्वाहा ।
इति धूप पूजा ।

धूप पूजा से आठ प्रकार के कर्म रूप ई धन का दाहक
निर्मल सवर भाव उत्पन्न होता है जिसमें कर्म बधन छूटता है,
तथा अन्तःकरण शुद्ध होता है ।

दीप पूजा

भविकु निर्मल बोध विकाशक, जिनगृहे शुभ दीपक दीपन
सुगुण राग विशुद्धि समन्वित, दधतु भाव विकाश कृतेजना०

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय दीप यजामहे स्वाहा ।
इति दीप पूजा ।

जैसे दीपक से मन्दिर में प्रकाश होता है वैसे ही हमारी
आत्मा में दीप पूजा से निर्मल बोध का विकाश हो, तथा
सद्गुणों पात्रजन में रचि उत्पन्न हो । ८/

अक्षत पूजा

मकल मङ्गल केलि निकेतन, परम मङ्गल भाव मय जिन ।
श्रयति भव्य जना इति दर्शयन्, दधतु नाथ पुरोक्षत स्वस्तिक

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय अक्षत यजामहे स्वाहा ।
इति अक्षत पूजा ।

जैसे अक्षत मंगलकारी है—वैसे ही मैं भी सर्व सद्भाव
प्राप्तकर मंगलकारी बनूँ ।

नैवेद्य पूजा

सफल पुद्गल सङ्ग विरजित, महज चेतन भाव रिलायसरू ।
सरस भोजन नप निवेदनात्, परम निवृत्ति भावमह स्पृहे ॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय नैवेद्य यनामहे स्वाहा ।
इति नैवेद्य पूजा ।

नैवेद्य मिठाई पकान्न आदि चढ़ावें ।

नैवेद्य पूजा से अत करण रमरण से रहित होकर स्वच्छ
दर्पण क समान बने । उसमें सहज निर्मल चेतन आत्मा का
साक्षात् दर्शन हो, तथा मोक्ष के यथार्थ स्वरूप का बोध हो ।

फल पूजा

कटुफर्म विपाक विनाशन, मरस पक्व फल प्रज ढोकन ।
विहितमोक्ष फलस्य प्रमो'पुर, कुर्वन्मिद्धि फलाय महानना

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय फल यनामहे स्वाहा ।
इति फल पूजा ।

(श्रीफल, सुपारी, नारियल प्रमुख चढ़ावें)

फल पूजा से कटु विपाक वाले फलों का क्षय होता है
एव मोक्ष फल की प्राप्ति होती है ।

अर्घ्य पूजा

इति जिनवर वृन्द भक्तितः पूजयन्ति,
सकल गुण निधान देवचन्द्र स्तुवन्ति ।
प्रतिदिवस मनन्त तत्र मुद्रासयन्ति,
परम सहज रूप मोक्ष सौम्य श्रयन्ति ।

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय अर्घ्यं यजामहे स्वाहा ।
धारों कोनों में पानी की धार दें । इति अर्घ्य पूजा ।

वस्त्र पूजा

(वस्त्र लेकर खड़ा रहे और यह श्लोक पढ़ें)

शक्रीयथा जिनपते सुरशैल धूला,
मिहासनो परिमित स्तना वसाने ।

दध्यक्षतैः कुसुम चन्दन गन्ध धूप ,

कृत्वार्चन तु विदधाति सुवस्त्र पूजा ॥१॥

तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिनालकार वस्त्रादिक,
पूजा तीर्थ कृता करौति सतत शक्त्यादि भक्ता इव ।
नीरागम्य निरञ्जनस्य विजिताराते स्त्रीलोकपते,
स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृति कृते क्लेश क्षयाकाङ्क्षया ॥२॥

ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानत ज्ञान शक्तये जन्म जरा
मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय वस्त्रेण यजामहे स्वाहा ।
वस्त्र चढावें ।

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

स्नात्र पूजा

॥ पाखंडी गाथा ॥

चौतीसँ अतिशय जुओ, वचनातिशय सजुत ।
सो परमेश्वर दक्षि मरि, सिंघासन मपत्त ॥

ढाल

मिंहासन बैठा जगमाण, देखि भरियण गुण मणि खाण ।
बे दीठे तुम्ह निम्मल भ्माण, रहिये परम महोदय ठाण ॥१॥

कुमुमाजलि मेली आदि जिणदा ॥

तोरा चरण कमल चौबीस पत्तों रे, चौबीस सौभागी,
चौबीस वैरागी, चौबीस जिणदा ।

(कुमुमाजलि हाथ में लेकर के यानी
यह पत्ते हुए चरणों में टीकी लगानी चाहिये ।)

गाथा

जो निज गुण पउजव भ्यो, तमु अनुभव ए गत्त ।
मुह पुगल आरोपता, ज्योति सुरग निरत्त ॥

गाथा

जो निज आत्म गुण आणदी, पुगल सगै जेह अपदी ।
जे परमेश्वर निज पत्त लीन, पत्तो प्रणमो भव्य अदीन ॥१॥

कुसुमाञ्जलि मेलो शांति जिणदा ॥

तोरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी,
चौबीस वैरागी, चौबीस जिणदा ।

कुसुमाञ्जलि मेलो शांति जिणदा—

(यह पत्रकर घुटनों पर टीकी लगानी चाहिये) ॥२॥

गाथा

निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण सपन ।

निम्मल घम्म उवएसकर, सो परमप्पा घन ॥३॥

ढाल

लोका लोक प्रकाशक नाणी, भविजल तारण जेहनी वाणी ।
परमानद ठणी नीसाणी, तसु भगते मुझ मति ठहराणी ॥१॥

कुसुमाञ्जलि मेलो नेमि जिणदा ।

तोरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी,
चौबीस वैरागी, चौबीस जिणदा ।

कुसुमाञ्जलि मेलो श्री नेमि जिणदा---

(यह पत्रकर दोनों टाथों पर टीकी लगानी चाहिये) ॥३॥

गाथा

जे सिद्धा सिज्जति जे, सिज्जिजस्सति अणत ।

जसु ओलमन ठविय मन, सो सेवो अरिहत्त ॥४॥

ढाल

शिव सुम्भ कारण जे त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहालें ।
उचम साधन मार्ग दिखालें, इन्दादिक सु चरण पखालें ॥१॥

कुमुमाञ्जलि मेलो पार्श्व जिणदा ।
 तोरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी,
 चौबीस वैरागी, चौबीस जिणदा ।
 कुमुमाञ्जलि मेलो श्री पार्श्व निर्णदा ।
 (यह पढ़कर दोनों कंधों पर टीकी लगानी चाहिये)

गाथा

सम दिष्टो देमनय, साहु साहुणी सार ।
 अचारिज उवमाय मुनि, जोनिम्मल आधार ॥५॥

टाल

चौबिह सधै जे मन धारयो, मोक्ष तणो कारण निर्धारयो ।
 त्रिबिह कुमुम धरजात गद्देवी, तमु चरणो प्रणमत ठवेरी ॥१॥
 कुमुमाञ्जलि मेलो श्री वीर जिणदा ।
 तोरा चरण कमल चौबीस पूजोरे, चौबीस सौभागी,
 चौबीस वैरागी, चौबीस जिणदा ।
 कुमुमाञ्जलि मेलो श्री वीर जिणदा--
 (यह पढ़कर मस्तक पर टीकी लगानी चाहिये) ॥५॥

॥ इति पाम्बडी गाथा ॥

रन्तु

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मनरग । कदाणक
 विह सधरिय । करिय सुजम्म सुपविच सुदर । सय इक
 सत्तरि तिःथकर । समै विहरत महियल । चवण समै इक

वीस जिण । जन्म समें इकवीस । भक्तिय भावै पूजिया ।
 करो सघ सुजगीस ॥१॥

(इकदिन अचिरा हुलरावती-ए देशी ।)

भरतीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ।
 तजि इन्द्रिय सुख आससना, करि थानक वोसनी सेवना ।
 अतिराग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहनी भावता ।
 सवि जीव करू शासन रसी, इसी भाव दया मन उहसी ।
 लहि परिणाम एइवु भलुँ, निपजाकी जिन पद निरमलु ।
 आळबध विचै इक भय करि, श्रद्धा सवेगधी धिर घरी ।
 तिहार्थी चविय लहै नर भय उदार, भरतें जिम ऐसैतेज सार ।
 महा विदेह विजय प्रधान, मरु खहै अवतरे जिन निधान ।

ढाल

पुण्यें सुपना ए देखें, मन में हर्ष विशेषै ।
 गजवर उज्जल सुन्दर, निर्मल वृषभ मनोहर ।
 निर्भय केसरी सिद्ध, लक्ष्मी अतिह अरीह ।
 अनुपम फूलनी माला, निर्मल शशि सुकमाला ।
 तेज तरण अति दीपै, इन्द्र ध्वजा जग जीपै ।
 पूरण कल्प पहर, पद्म सरोवर पूर ।
 हग्यारमे रयणायर, देखें माताजी गुण सावर ।
 बारमें भुवन विमान, तेरमें रत्न निधान ।
 अग्नि शिखा गिरधूम, देखे माताजी अनुपम ।
 हरखी रायने भासे, राजा अर्थ प्रकाशे ।

अगतपति जिनवर मुखकर, होम्ये पुत्र मनोहर ।
इन्द्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलम्ये ।

वस्तु

पुण्य उदय पुण्य उदय उषना जिणनाह, माता तव रयणी
समै देखि सुपन हरपत जागिय । सुपन कहि निज कतने सुपन
अरथ सामलो सोभागिय, त्रिमुवन तिलक महागुणी, होम्ये
पुत्र निधान । इन्द्रादिक जसु पय नमी, फलम्ये सिद्ध विधान ।

॥ ढाल चन्द्रा उल्लालानी ॥

सोहम पति आसन कपियो, देई अवघे मन आणदियो ।
मुक्त आतम निरमल करण काज, भव जल तारण प्रगथ्यो जिहाज ।
मन अटवि पारग सत्यनाह, केवल नाणाइय गुण अगाह ।
शिव साधन गुण अकुर जेह, कारण उरथ्यो आपाढ मेद ।
हरपै विकसै तव रोम राय, बलयादिक मां निजतनु न माय ।
सिंहासन थी उठो सुरिंद, प्रणमतो जिण आदकन्द ।
सग अइपय पमुहा आवितत्थ, करि अब्जलि प्रणमिय मत्य सत्य ।
मुख भाखे ऐ स्त्रिण आज सार, तियन्थोय पहु दीठो उदार ।
रे रे निमुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु समेव ।
तमु शाति करण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुड समान ।
ते देव सकल तारण समत्य, प्रगथ्यो तमु प्रणमी हुई सनत्य ।
इम जम्पी शत्रुस्तत्र करेनि, तव देव देवि हरखै सुणेनि ।
गावै तव रम्भा गीत गान, सुरलोऊ हुवो मगल निधान ।
नर खेत्रे आरज वश ठाम, जिनराज धरै सुर

पिता माता घरे उच्छ्वर अलेख, जिन शासन मगल अति विशेष ।
 सुरपति देवादिक हर्ष सग, समय अरथी जनने उमग ।
 शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्यां इन्द्रदिक हर्ष साथ ।
 सुख पाम्या त्रिसुवन सर्व जीव, बघाई विघाई थई अतीव ।

यह कह कर फल और चावलों से बघाना और बाद में
 चैत्य बदन करके और धूप देना चाहिये ।

॥ श्री शान्ति जिननो कलश कहिसु-ए देशी ॥

त्रोटक

श्री तीर्थ पतिनो कलश मज्जन गाइये सुखकार,
 नरखेत मडन दुह पहडन भविक मन आधार ।
 तिहां राव राणा हर्ष उच्छ्वर थयो जग जयकार,
 दिसी कुमरि अवधि विशेष जाणी लहो हर्ष अपार ।
 निय अमर अमरी सग कुमरी गावती गुण छद,
 जिन जननी पासें आवि पोहती गहगृहीती आणद ।
 हे माय तें जिनराज जायो शक्ति बघायो रम्म,
 अम जम्म निम्मल करण कारण करिस सुइय कम्म ।
 तिहा मूमिशोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार,
 तिहा करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जनकार ।
 वर राखडो जिन पाणी बांधी द्वियें इम आसीस,
 जुग कोड़ा कौडी चिरजीवो धर्म दायक ईश ।

ढाल इरूनसानी

जगनायकजी, त्रिभुवन बनहित कारण ।
 परमात्मनी, चिदानन्द धनसारण ।
 जिन रयणीजी, दश दिस उज्जलता धरै ।
 गुम लगनेनी, ज्योतिष चक्रते सचरै ।
 जिन जनम्याजी, जिन अवसर माता धरै । ६
 तिण अवसरनी, इन्द्रासन पिण धर हरै ।

त्रोटक

धरहरे आसन इन्द्र चित्तें कवण अवसर ए बण्यो ।
 जिन जन्म उच्छ्रव काल जाणी अतिहि आनन्द उपयो ॥
 निज सिद्ध सम्पति हेतु जिनवर जाणि भगते रुमद्यो ।
 विकसत वदन प्रमोद बधतै देव नायक गह गद्यो ॥

ढाल

तव सुरपतिजी, घटानाद करावण ।
 सुरलोकेंजी, घोषणा एहु दिरावण ॥
 नर क्षेत्रेंजी, जिनवर जन्म हुवो अद्यै ।
 तसु भगतेंजी, सुरपति मंदिर गिर गद्यै ॥

त्रोटक

गद्यै मंदर शिखर ऊपर भवन जीवन जिन तणों ।
 जिन जन्म उच्छ्रव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणों ॥
 तुम शुद्ध समकित्ता थास्यें निर्मल देवाधिदेव निहालता ।
 आपणा पातिक सबे जास्यें नाथ चरण*

ढाल

इम सांमलित्री, सुरवरकोड़ी बहु मिटी ।
 जिन वदनजी, मदर गिर साहमी घली ।
 सोहमपतिजी, जिन नानी घर आविया ।
 जिनमाताजी, वदी स्वामी बधाविया ।

श्रोटक

बधाविया जिवर हर्ष बहुलै धर्य हँ हृन पुण्य ए ।
 श्रेलोकम नायक देव दीठौ मुक्त समोर्तुण अर्य ए ॥
 हे जगत जननी पुत्र तुम चौ मेर मज्जन घर करी ।
 उच्छ्रम तुम चै बलिय यापिस आतमां पुण्ये मरी ॥

ढाल

सुरगामकनी, जिन निजकर कमलें ठपा ।
 पांचरूपेजी, अतिशय महिनाये स्तव्या ॥
 गटकविधजी, सब बचीस आगल बहे ।
 सुरकोड़ीजी, जिन दरक्षणने उमडे ॥

श्रोटक

सुरकोड़ कोड़ी नाचती वलि नाथ शूचि गुण गावती ।
 अरुता कोड़ी हाथ जोड़ी हाव भाव दिखावती ॥
 जय अयो तू जियाराज जग गुर एम दे आसीस ए ।
 अकथाप नरा आपार नीना एक तू जगदीस ए ॥

ढाल

सुर गिरपरजी, पाडुक बन में चिहूँ दिसैं ।
 गिरि शिल्परजी, सिंहासन सासय वसे ॥
 तिहाभाणीजी, शक्रे जिन खोले मखा ।
 चउसठेजी, तिहां मुरपति आवी रखा ॥

नोटक

अविया मुरपति सर्व भगते कलश श्रेणि बणावए ।
 सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषधि सर्व वस्तु अणावए ॥
 अच्युयपति तिहा हुकुम कीनो देव कोडा कोडी ने ।
 जिन मज्जनारथे नीर लाओ सबै मुरकर जोड़िने ॥

(जल का कलश लेकर सड़े रहे और पने)

॥ शक्ति ने कारणे हन्द्र कलश भरे-ए देशी ॥

ढाल

आत्म साधन रसी देव कोडी हसी ।
 उल्मी ने घसी खीर सागर दिशी ॥
 पडमदह आदि दह गग पमुहा नई ।
 तीर्थ जल अमल लेवा भणी ते गई ॥
 जाति अइ कलश करि सहस अठोत्तरा ।
 धत्र चामर सिंहासणे शुभ तरा ॥
 अ/ उपगरण पुष्क चगेरि पमुहा सों ।
 आगमें भासिया तेम आणि ठवें ॥

तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता ।

गावता भावता धर्म उन्नति रता ॥

तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता ।

घय श्रम शक्ति शुचि भक्ति इम भावता ।

समकित्तें बीज निज आत्म आरोपता ।

कलश पाणी मिसै भक्ति जल सींचता ॥

मेरु सिंह—रोबरे सर्व आव्या वही ।

शक्र उच्छ्रङ्ग जिन देखि मन गहगही ॥

गाथा

हहो देवा अणाई कालो, अदिट्ट पुढ्यो तिलोय कारण ।

तिलोय बंधु मिच्छत मोह विद्धसणो ।

आणाइति हण थिणा सणो, देवाहि देवो दिट्ट्यो हिय कामेहिं ॥

ढाल

एम परिणत वण भुवन जोईसरा,

देव वेमाणिया मूर्ति धम्मायरा । ७

केवि कप्प ट्टिया केवि मिचाणुगा ।

केवि वर रमण वरणेण अइ उच्छ्रगा ।

वस्तु

तत्थ अच्युय तत्थ अच्युय इन्द्र आदेश ।

कर जोडि सब देव गण लेई कलश आदेश म्रामिय ।

अद्भुत रूप सरूप जुयक्वण एइ पुच्छन्त सामिय ?

इन्द्र कहे जग ताराग पारग अह्द परमेम ।

दायक नायक धर्म निधि करिये तमु अभियेक ॥

(इस समय जल की थोड़ी सी धारा देना)

॥ तीर्थ कमन्वर उदक भरीं पुक सागर आवै-ण देनी ॥

टाल

पूर्वा कल्प शुचि उदकनी धारा, त्रिारर अगे नामे ।

आतम निर्मल भाव करता, बधते शुभ परिणामे ॥

अयुतादिक सुगति मज्जन, लोकपाल लाकानु ।

सामानिक इन्द्राणी पमुदा, इम अभियेक करन ॥ पूर्वा कल्प

गाथा

तव इशाण मुरिंदा, तवक परंजेइ करि सुपताठ ।

तुम अरे महनाओ, निणमित अह्द अप्पह ॥

ता सञ्चिदो पमणइ, साहम्मि बच्च नम्मि धहुत्ताओ ।

आणा पव तण, गिह्द होउ कय वा भो ॥

(यह कल कर सभी कउरीं क जग्गे भगवान को स्नान कराना चाहिये) ।

ढाल

सोदम मुरपति वृषम रूप करि ग्ठवण करे प्रमु अगे ।

करिय विलपन पुपमाल ठवि वर आमरण अमगे ॥सोदम०१॥

तव मुरवर बहु जय जय रव करि त्रिदशैधरि आणइ । नञ्चै

मोक्ष मारग सारथपति पाग्वा भात्रम्युं हि मय व ॥सो०२॥

कोड़ बचीस सोवन उगारी वाजते वरनाद ।
 सुरपति सघ अमर श्री प्रभु ने जननीने सुप्रसाद ॥
 आणी धापी एम पयपे अम्ह निस्तरिया आज ।
 पुत्र तुमारो धणिय हमारो तारण तरण जिहाज ॥सोहम०३॥
 मात जतन करि राखज्यो एहने तुम सुत हम आधार ।
 सुरपति भक्ति सहित उदीश्वर करे जिन भक्ति उदार ॥सो०४॥
 निय निय कप गया सहु निज्जेर कहता प्रभु गुण सार ।
 दीक्षा केवल नान कल्याणक इच्छा चित्त मभार ॥सोहम०५॥
 ररतरगच्छ जिण आणा रगी राज सागर उवज्झाय ।
 ज्ञान धर्म दीपचद सुपाठक सुगुर तणे सुपसाय ॥
 देवचन्द निनु भक्ते गायो ज म महोच्छू छद । ^१व
 बोध बीज अशुरो उलस्यो सप सकल आणद ॥सोहम०६॥

राग वेलावल

इम पूजा भगते करो, आत्मदित काज ।
 तजिम विभय निज भावा, रमतां शिवराज ॥ इम पूजा ॥१॥
 काल आते जे हुवा, होस्ये जेहे ।
 जिणद सपई सीमधर प्रभु, केवल नाण दिणद ॥ इम पूजा ॥२॥
 जन्म महोच्छव इण परै, श्रावक रुचिवत ।
 विरचै जिन प्रतिमा तणे, अनुमोदन खत्त ॥ इम पूजा ॥३॥
 देवचद जिन पजना, करतां भव पार ।
 जिन महिमा जिन सारसी, कही सूम मभार ॥ इम पूजा ॥
 ॥ इति स्नात्र पूजा ॥

साधरीजी श्री ऋद्धिश्रीजी की स्मृति में

श्री जिन दर्शन-पूजा विधि

एव

श्री स्नात्र पूजा

मिलने का पता—

श्री जैन श्वेताम्बर पचायती मन्दिर

१३६, तुलापट्टी, कलकत्ता ७

प्रथमावृत्ति

१३००

मूल्य

सद्‌उपयोग

